4

सियोन में रखे पत्थर पर भरोसा रखें
(1 पतरस 2:1-10)

स्वविनाशकारी और उग्र व्यक्ति आम तौर पर लोगों को एक-दूसरे से अलग करता है। कई लोगों को सम्बन्ध के महत्व की कम समझ होती है। हम किसी के प्रति जवाबदेह नहीं होना पसन्द करते हैं, या यूं कहें कि हम ज़रूरत पड़ने, अकेला होने या डरने तक ऐसे ही रहना चाहते हैं।

मसीही लोग जिनके नाम पतरस ने अपना पहला पत्र लिखा, जीवन के उस ढंग से कट गए थे, जिसने उन्हें समर्थन दिया था और संसार में उन्हें जगह दिलाई थी। उन्हें सम्बन्ध, संगति, आपसी समर्थन और आपसी जवाबदेही के संदेश की आवश्यकता थी, जो 2:1-10 का सार है। उन्हें मालूम था कि वे क्या थे, परन्तु अब वे कहां थे, अब जबकि उन्होंने मसीह को पहन लिया था और उन रस्सियों को, जिन्होंने उन्हें उनके अतीत से बांधा हुआ था, तोड़ दिया था? पतरस कह रहा था, ''तुम नये-नये पैदा हुए बच्चे हो, जिन्हें बढ़ने के लिए आत्मिक दूध की आवश्यकता है। तुम कोने के सिरे के मुख्य पत्थर यीशु मसीह के ऊपर बनाए गए जीवित पत्थर हो। तुम परमेश्वर की विशेष पसन्द की चुनी हुई प्रजा हो।'' सम्बन्ध और सहानुभूति इन आयतों का केन्द्रीय विषय है।

नवजन्मे बच्चों के लिए निर्मल दूध (2:1-3)

पतरस के कुछ पाठक दस या पन्द्रह से अधिक वर्षों से मसीही थे। उनमें से अधिकतर विश्वास में उससे काफ़ी छोटे थे। पुराने जीवन को नये से अलग करने वाली निशानदेही की स्पष्ट रेखा पर फिर से बल दिए जाने की आवश्यकता थी। उनके जीवन मसीह की भलाई से भरने से पहले उन्हें अपना सांसारिक सामान निकालना आवश्यक था।

पुराने को निकालना

पतरस ने उनसे जीवन के पुराने ढंगों को निकाल देने का आग्रह किया। उसने कहा, ''इसलिए सब प्रकार का वैरभाव ... दूर करके'' (2:1)। ''दूर करके'' वाक्यांश (''laying aside,'' KJV; ''rid your selves,'' NIV) का इस्तेमाल वैसे ही किया गया था, जैसे पौलुस ने, जिसने इफिसियों 4:22 में मसीही लोगों से जीवन का पुराना ढंग ''उतार डालने'' और 4:24 में ''नये मनुष्यत्व को पहन'' लेने का आग्रह किया, कुलुस्सियों 3:8-11 में भी इसी प्रकार मिलता है। इसी शब्द का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने अंधकार के कामों को ''त्याग'' देने की विनती की (रोमियों 13:12)। यह स्पष्ट है कि अपना जीवन मसीह में डालने से पहले अन्य

बातों को बाहर निकालना आवश्यक है।

वैर-भाव, छल, कपट, डाह, निंदा को पतरस ने कहा कि ये जीवन के पुराने ढंग में पाई जाने वाली बुराइयां थीं। इन्हें निकाल देना आवश्यक है।

पतरस के शब्द अधिकतर उन बातों को दिखाते थे, जो मसीही जीवन में से निकाली जानी थीं, न कि विशेष व्यवहारों को। अनुवादित शब्द ''वैर भाव'' बुरी इच्छा के लिए एक सामान्य शब्द है। अगले शब्द को NASB और KJV में ''छल'' परन्तु NIV में ''धोखा'' बताया गया है। नये नियम के अलावा अन्य यूनानी लेखों में, इस शब्द का इस्तेमाल कई बार मछुआरे द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला प्रलोभन या चारा हो सकता है। ''छल'' आम तौर पर किसी को हानि पहुंचाने के लिए उसे गुमराह करना है। तीसरे शब्द ''कपट'' को थोड़ी व्याख्या की आवश्यकता है। यह जो नहीं है उसका दिखावा करते हुए झूठे या दिखावटी ढंग से अपने आपको आगे करने की विशेषता है।

पतरस द्वारा इस्तेमाल किया गया चौथा शब्द ''डाह'' चालाकी भरी बुराई है। यह द्वेष जैसा शब्द नहीं है, चाहे दोनों आपस में मिलते-जुलते रहते हैं। डाह का अर्थ असंतुष्टि की दुर्भावनापूर्ण भावना और किसी के प्रति केवल इसलिए बुरी इच्छा रखना है, क्योंकि जो कुछ हम अपने लिए चाहते थे, वह उसे मिल गया, जिससे उसे आशीष मिल गई है। डाह एक कुरूप बुराई है, जिसमें हम सब अपने आपको पा सकते हैं।

अन्तिम शब्द, ''निंदा'' (''बुराई करना,'' KJV) केवल इस पद में और 2 कुरिन्थियों 12:20 में मिलता है। इसका अर्थ किसी का चरित्र या अच्छा नाम बदनाम करना है। बात सही हो या गलत इससे इतना फर्क नहीं पड़ता। जब वैर-भाव से किसी दूसरे की प्रतिष्ठा खत्म की जाती है, तो यह निंदा करने का दोष है।

इन शब्दों में समान बात क्या है? इन सब में उन बुराइयों को बताया गया है, जो एकता और सद्भाव को नष्ट करती हैं। वे पूरी तरह से ''भाइचारे की निष्कपट प्रीति'' के विरुद्ध है (1:22)। स्वभाव से ही प्रभु की कलीसिया एक-दूसरे के साथ लोगों के प्रेम से जुड़ी है (यूहन्ना 13:35)। ये बुराइयां देह को अलग करती हैं। वे संसार में आम पाई जाती हैं, परन्तु मसीही लोगों के लिए उन्हें दूर रखना आवश्यक है। यदि इस पत्र के आरम्भिक पाठकों को भाइचारे और एकता के अर्थ को समझना था, तो वे ऐसी बुराइयों को व्यवहार में नहीं ला सकते थे। जीवन के अपने पुराने ढंगों को छोड़कर उन्हें समर्थन और सामर्थ की आवश्यकता थी, जिसे संगठित और स्नेह करने वाले लोग दे सकते थे।

वचन के निर्मल दूध की लालसा

अध्याय 1 में दो बार (आयतें 3, 23) पतरस ने अपने पाठकों को नया जन्म पाए हुए बताया। आत्मिक तौर पर कहें तो वे नवजात थे। उन्हें जीवन के अपने अंगों को दूर करना था और क्योंकि वे नवजात थे, इसलिए उन्हें ''वचन के निर्मल दूध'' की लालसा करना आवश्यक था (2:2)। अनुवादों में अन्तर (''sincere milk of the word,'' KJV; ''pure spirtual milk,'' NIV) से यूनानी शब्द की झलक मिलती है, जिसका अनुवाद करना कठिन है। KJV में logikon का अनुवाद ''वचन की'' है, जबकि NIV में इसका अनुवाद आत्मिक है। अच्छी बात

यह है कि कोई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने के लिए हमें यहां अनुवाद के प्रश्नों को सुलझाने की आवश्यकता नहीं है। आत्मिकता आवश्यक तौर पर परमेश्वर के प्रकाशन से उसके वचन से जुड़ी है। वचन ही वह स्रोत है, जिससे आत्मिक सामर्थ निकलती है।

यह अद्‌भुत है कि परमेश्वर ने उसके वचन और उसके ढंगों के लिए तड़प को दिखाने के लिए भोजन और पीने की इच्छा का इस्तेमाल किया। एक धन्य वचन में हम पढ़ते हैं, ''धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे'' (मत्ती 5:6)। भजनकार ने लिखा है, ''हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है'' (भजन संहिता 63:1)। पतरस ने बढ़ने के लिए नवजात बच्चे के दूध मांगने की कल्पना की। पतरस ने सुझाव दिया, ''वचन के निर्मल दूध की लालसा करो और तुम अपने आपको प्रभु के परिवार में मज़बूत और सुरक्षित पाओगे। तुम उस धन को जानने के लिए जो मसीह ने अपने लोगों के लिए तैयार किया है, बड़े हो जाओगे।''

मनुष्यों का ठुकराया हुआ परन्तु परमेश्वर का चुना हुआ (2:4-8)

मसीही लोग उसके साथ अपने सम्बन्ध के द्वारा ''जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और जीवित पत्थर है'' सम्बन्ध का अनुभव करते हैं। नया नियम मसीही लोगों को कलीसिया का स्वभाव समझाने में सहायता के लिए कई दिलकश चित्रों का इस्तेमाल करता है। यह एक देह है, इसके कई अंग पूरी देह की भलाई के लिए मिलकर काम करते हैं (1 कुरिन्थियों 12); यह एक राज्य जिसके सब लोग सबकी भलाई के लिए काम करते हैं; और यह एक इमारत है, जिसके अलग-अलग भाग पूरी इमारत को सहारा देते हैं। सभी अलंकारों की ये बातें मिलती-जुलती हैं कि वे परमेश्वर के लोगों की एक-दूसरे पर निर्भरता पर ज़ोर देते हैं (''क्योंकि हम आपस में एक-दूसरे के अंग हैं,'' इफिसियों 4:25), और वे यह स्पष्ट करते हैं कि मसीही लोगों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध है और उस सम्बन्ध के कारण वे सब मसीह के साथ मिले हैं।

जीविते पत्थर

पतरस ने कलीसिया को परमेश्वर के बनाए हुए एक बड़े घर के रूप में माना (2:4)। मसीह कोने का पत्थर है। इमारत का डिज़ाइन और इसकी सजावट ही नहीं, बल्कि इसकी दीवारें भी इस बड़े कोने के पत्थर पर टिकी हैं। पौलुस ने भी मसीह को कोने के सिरे का पत्थर बताते हुए लिखा, ''जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है'' (इफिसियों 2:21)।

कलीसिया मसीह में इकट्ठे हुए लोगों का एक आत्मिक घर है, परन्तु यह आत्मिक बलिदान पेश करने वाली एक याजकाई भी है। ''बलिदान'' शब्द का अर्थ कोई ऐसी चीज़ हो चला है, जिसे कोई अपने लिए लेने से इनकार करता है। कहा जा सकता है, ''मैंने अपने घर को पेंट करने के लिए दो हफ्ते की छुट्टियां बलिदान कर दीं।'' 2:5 में बलिदान में अपना इनकार करने की कोई भावना नहीं है। यह स्वेच्छा से दी गई भेंट अर्थात पिता की स्तुति और महिमा के लिए आनन्द की भेंट है। मूसा की व्यवस्था के अधीन केवल याजकों को बलिदान भेंट करने का अधिकार था। हर

मसीही याजक है। इमारत अपने आप में एक पवित्र याजकाई है। इन याजकों द्वारा भेंट किया जाने वाला बलिदान उनके जीवन हैं, यानी वे जीवन जो मसीह के स्वरूप में नया जन्म पाए हुए हैं।

सियोन में का पत्थर

पतरस ने बीते युगों से परमेश्वर के लोगों के साथ चल रही सहभागिता को अपने पाठकों को याद दिलाया। यशायाह नबी ने सियोन में परमेश्वर द्वारा एक पत्थर अर्थात एक परखा हुआ और कोने के सिरे का बहुमूल्य पत्थर (यशायाह 28:16) रखने और परमेश्वर की वह चट्टान होने की बात की, जिस पर उसकी आज्ञा न मानने वाले लोगों ने ठोकर खानी थी (यशायाह 8:14)। पौलुस ने यहूदियों द्वारा मसीह के ठुकराए जाने की चर्चा की और 2:6-8 में पतरस की तरह उसने रोमियों 9:33 में उन दो आयतों को मिला दिया। प्रेरितों ने मसीह को सियोन में परमेश्वर द्वारा रखा कोने का पत्थर और आज्ञा न मानने वालों के लिए ठोकर लगने के पत्थर के रूप में पहचान लिया था।

महत्वपूर्ण सत्य यह था कि परमेश्वर ने मसीह को, अर्थात ठुकराए हुए पत्थर को अपनी इमारत का नींव का पत्थर बना दिया। भजन संहिता 118:22 से यह विचार निकला। मसीह ने मत्ती 21:42 में यह आयत दोहराई (तुलना लूका 20:17) और पतरस ने स्वयं यरूशलेम की सभा के सामने खड़ा होने के समय उसे दोहराया (प्रेरितों 4:11)।

यह सब मसीही व्यक्ति को बताता है कि वह कौन है। वह हर युग के परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के साथ एक है। वह अब्राहम की संतान, यशायाह का मित्र, भजनकार का छात्र है। उसकी विरासत अमीर और कुलीन है। ''यहूदी होना'' (यानी परमेश्वर के चुने हुए होना) शारीरिक जन्म से नहीं, बल्कि आत्मिक विरासत के साथ एक हो जाने में। रोमियों 2:28, 29 में पौलुस ने इतने अच्छे ढंग से कहा था: ''क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रकट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रकट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।'' मसीही लोगों के लिए जो अपने आपको जीवन के पुराने ढंग और परम्पराओं से काट लेते हैं, जो उसने बताई थीं, पतरस ने कहा, ''अब तुम नये लोगों से जुड़ गए हो। तुम्हें नई परम्पराओं और नई आत्मिक विरासत का पता चल जाएगा और तुम इसे समझ लोगे।''

मसीही लोगों के लिए यीशु कोने के सिरे का बहुमूल्य पत्थर, सत्य की नींव, उद्धार और जीवन का देने वाला है। परन्तु यही पत्थर आज्ञा न मानने वालों के लिए ठोकर खाने का पत्थर है। हमें आश्चर्य नहीं होता कि कुछ लोग आज्ञाकारी नहीं थे, परन्तु 2:8 का अन्तिम भाग कुछ सवाल खड़े करता है। आज्ञा न मानने वाले कहने का पतरस का क्या अर्थ था, ''इसी के लिए वे ठहराए भी गए थे''? KJV में भी ऐसी ही शब्दावली है (''जिसके लिए वे ठहराए भी गए थे''); और NIV में (''उनका यही हाल होना था'') थोड़ी सी सहायता देता है। हम इन शब्दों का अर्थ यह निकाल सकते हैं, आज्ञा न मानने वालों के लिए अपने कामों की कोई पसन्द नहीं थी, यानी स्वाभाविक होने के कारण और अनन्तकाल के लिए ठहराए जाने के कारण, उन्होंने मसीह के संदेश को ठुकरा दिया। दूसरी ओर पतरस यह कह रहा हो सकता है कि संसार की दुष्ट स्थिति

और मनुष्यजाति के विद्रोही स्वभाव के कारण, कुछ लोगों ने मसीह को ठुकराना था। अपने आज्ञापालन में मानवीय जीवों की कोई ज़िम्मेदारी है (और पतरस यह पत्र किसी और कारण से क्यों लिखता?), तो हमें बाद वाली व्याख्या को प्राथमिकता देनी होगी।

राजपदधारी याजकों का समाज (2:9, 10)

पतरस ने कहा, ''तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो'' (2:9)। इसकी हर बात में से परमेश्वर के अपने लोगों की अगुआई करने, उनका पालन-पोषण करने और उन्हें अपनी इच्छा अनुसार ढालने की इतिहास की गूंज सुनाई देती है। मसीही लोग परम्परा और प्रतिज्ञा के सदियों के वारिस हैं।

चुना हुआ वंश

संसार के सब प्राचीन लोगों में से, परमेश्वर ने अपना नाम पहनने के लिए इस्राएल को चुना था। मूसा ने पूछा था, ''क्या ऐसी जाति कोई हुई है?'' (व्यवस्थाविवरण 4:32-34)। इस्राएलियों को अपनी आशिषों की समझ नहीं आ सकती थी। संसार का एकमात्र परमेश्वर महत्वहीन गुलामों को अपने लोग होने के लिए कैसे चुन सकता था? उन्हें यह उत्तर दिया गया था: ''यहोवा ने तुझ को चुन लिया है, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है, जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी'' (व्यवस्थाविवरण 7:6-9)। परमेश्वर के चुनने की भावना इस्राएलियों में इतनी मज़बूत थी कि सब प्राचीन लोगों में से केवल उन्होंने ही आज के दिन तक अपने धर्म और अपनी पहचान को बनाए रखा है।

परमेश्वर के आज भी चुने हुए लोग हैं। वे संसार की अलग-अलग जातियों में रहते, विभिन्न भाषाएं बोलते और अलग-अलग परम्पराओं को मानते हैं; वे आपस में एक दूसरे के साथ बंधे हुए हैं क्योंकि वे एक ही कोने के पत्थर अर्थात मसीह पर बने हैं। बपतिस्मा लेकर जल और आत्मा से लोग मसीही बनते हैं। हम उसके चुने हुए लोग बन जाते हैं।

हमें चाहिए कि इस बात को कभी न भूलें कि हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। हम कभी उस धन्य नाम को बदनाम न करें। हम उस पवित्र मन्दिर से प्रेम रखें और उसे बड़ा करें, जिसमें उसने हमें जीविते पत्थरों के रूप में रखा है।

राजपदधारी याजकों का समाज

2:9 में चाहे ''याजकाई'' से पहले का विशेषण 2:5 वाले से अलग है, परन्तु विचार एक ही है। पहले पतरस ने मसीही लोगों के याजक होने का वर्णन करने के लिए ''पवित्र'' शब्द का इस्तेमाल किया था जबकि 2:9 में उसने ''राजपदधारी'' शब्द का इस्तेमाल किया। याजक होने के नाते चुने हुए लोगों को परमेश्वर की आंतरिक सभा तक जाने की छूट है। मूसा की व्यवस्था के अधीन केवल हारून के वंशज़ों को ही याजक बनाया जाता था। उन्हें जो पवित्र स्थान में बलिदान भेंट करने और खड़े होने का सम्मान मिलता था। याजक के रूप में सेवा करना बड़े सौभाग्य की बात थी। यह एक अमूल्य आशीष थी, जिसे पतरस ने कहा कि अब यह मसीही व्यक्ति के लिए है। उसने कहा कि मसीह में हर मसीही याजक है जिसे पवित्र स्थान में खड़े होने और परमेश्वर

को ग्राह्य योग्य आत्मिक बलिदान भेंट करने का अधिकार है।

पवित्र लोग

एशिया माइनर के प्राचीन संसार की सार्वजनिक इमारतें स्मार्क और शिलालेख इस बात के साक्षी हैं कि उन नगरों के लोग इन पर बड़ा गर्व करते थे। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अपने नगरों के प्रति अत्यन्त निष्ठा रखने वाले वे लोग मसीही लोगों के कट्टर शत्रु बन गए, जो स्वर्गीय यरूशलेम के प्रति ही श्रद्धा रखते थे। मसीही लोग इस बात को मानते थे कि वे पृथ्वी पर मुसाफिर और परदेसी हैं जबकि मनुष्यों के नगरों की नागरिकता थोड़ी देर की है। सरकारें, नगर और उनमें रहने वाले संसार के दृश्यों पर आते-जाते रहते हैं। पतरस से कुछ साल पहले लिखते हुए इतिहासकार लाइवी ने रिपब्लिकल रोम के विषय में कहा था, ''हम वहां पर पहुंच चुके हैं जहां हम न तो अपनी बुराइयों को सहन कर सकते हैं और न उनका इलाज कर सकते हैं।'' कौमें इसी रास्ते पर चलती हैं।

उसके पाठकों ने जिस भी नगर के प्रति अपनी निष्ठा दिखाई, पतरस ने उन्हें बताया, ''मसीह को जानने से पहले तुम कुछ नहीं थे। अब तुम पवित्र लोग अर्थात परमेश्वर के लोग हो, जिन पर दया की गई है।'' इफिसुस के लोगों को पौलुस ने लिखा, ''इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए'' (इफिसियों 2:19)। मसीह को जानने उसके पास आने वाले के लिए, परमेश्वर के राज्य की नागरिकता अन्य सब निष्ठाओं से बढ़कर है। सम्बन्ध और पहचान परमेश्वर द्वारा चुने जाने और उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा उसके लोगों में मिलाए जाने से मिलती है।

सारांश

हमें संसार में जाना आवश्यक है, खोए हुओं को सिखाने के लिए, संसार का नमक और खमीर बनने के लिए। विस्तार और विजय के लिए समय है और फिर से इकट्ठा होने का समय है, यह बताने का कि हम कौन हैं और अपने आपको जाति के लिए परमेश्वर के बड़े नमूने के रूप में दिखाने का समय है। 2:1-10 में पतरस ने यह सुनिश्चित किया कि उसके पाठकों को पता हो कि वे कौन हैं। उसने छुड़ाए हुओं के समाज से उनके जुड़े होने को समझाया।

जब तक मसीही लोग स्वयं अपने आपको अलग लोग कम और पवित्र मन्दिर के स्तम्भों के रूप में अधिक नहीं मानते तब तक कलीसिया संसार में सुसमाचार का संदेश लेकर नहीं जा सकती। यदि परमेश्वर के लोगों में समुदाय और आपसी ज़िम्मेदारी की भावना रखनी है तो सुसमाचार संदेश के लिए पहली सदी के एशिया माइनर की संस्कृति की तरह अपनी संस्कृति का सामना करके उसे बदलना आवश्यक है।

क्रिस्टोफर लैश ने पश्चिमी संस्कृति का अवलोकन किया है, ''आज के लिए जीना अर्थात अपने लिए जीना न कि अपनी आने वाली पीढ़ियों या संतान के लिए, लोगों का जुनून है।''[1] स्वार्थी व्यक्तिवाद जो हमारे समय का हॉलमार्क है, उस पर विजय केवल वही लोग पा सकते हैं, जिन्हें यकीन है कि वे चुने हुए अर्थात पवित्र लोग हैं। परमेश्वर के लोग विजय पा लेंगे, जब यह बात उनके मनों और प्राण में बस जाएगी, ''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक

घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (2:5)।

टिप्पणी

[1]क्रिस्टोफर लैश, *दि कल्चर ऑफ़ नारसिसिस्म* (न्यू यॉर्क: वार्नर बुक्स, 1979), 30.